Page Three

Classified

Adds can be booked under these Categories : (all day publication)

Recruitment
Property
Business Opportunity
Vehicles
Announcements
Antiques & Collectables
Barter
Books
Computers
Domain Names
Education
Miscellaneous
Entertainment & Event
Hobbies & Interests
Services
Jewellery & Watches
Music
Obituary
Pets & Animals
Retail
Sales & Bargains
Health & Sports
Travel

Matrimonial (Sunday Only)

अब मात्र रु. 20 प्रति शब्द

ओपीडी में मरीजों की भारी भीड़, एक बेड पर दो–दो मरीज

दिक्कतें

सरकारी अस्पतालों में ही सोशल डिस्टेंसिंग का कॉन्सेप्ट फेल

संवाददाता

देहरादून। शहर के सरकारी अस्पतालों में ही सोशल डिस्टेंसिंग का कॉन्सेप्ट फेल हो गया है। एक तरफ जहां ओपीडी में मरीजों की भारी भीड़ जुट रही है, वॉर्डों में भी स्थित बहुत अच्छी नहीं है। इसका एक उदाहरण गांधी शताब्दी अस्पताल है। राज्य सरकार ने दून मेडिकल कॉलेज को पूरी तरह से कोरोना अस्पताल में तब्दील कर दिया है। इस वजह से डालनवाला स्थित गांधी अस्पताल पर एकाएक डिलीवरी का बोझ तीन गुना बढ़ गया है। हाल ये है कि एक बेड पर दो–दो मरीज भर्ती करने पड़े। बहरहाल अस्पताल प्रशासन का दावा है कि एकाएक मरीजों का बोझ बढ़ने से यह दिक्कत आई थी। अब व्यवस्थाएं दुरुस्त कर ली गई हैं।

दून मेडिकल कॉलेज को राज्य सरकार ने कोरोना के इलाज के लिए आरक्षित किया है। यहीं कोरोना संक्रमित व संदिग्ध ज्यादातर मरीज भर्ती भी हैं। शहर में सबसे ज्यादा

डिलिवरी दून महिला अस्पताल में होती है, पर कोरोना के भय के कारण भी लोग यहां जाने से बच रहे हैं। ऐसे में गांधी शताब्दी अस्पताल को महिला अस्पताल में तब्दील कर दिया गया है। ऐसे में अस्पताल में एकाएक मरीजों का बोझ बढ़ गया और व्यवस्थाएं चरमरा गई। बताया गया कि सामान्य दिनों में यहां रोजाना महज 5–6 डिलीवरी होती थी, जबकि बीते कुछ दिनों से रोजाना 20 डिलीवरी औसतन हो रही हैं।

अस्पताल के प्रमुख चिकित्सा अधीक्षक डॉ. बीसी रमोला का कहना है अस्पताल में गाइनी के 78 बेड हैं। पर स्टाफ उस अनुपात में नहीं है। गुरुवार को मरीजों का बोझ तेजी से बढ़ गया। ऐसे में दिक्कत आई थी। लेकिन अब व्यवस्था बनाई जा रही है। अस्पताल में स्टाफ की कमी है।स्टाफ नर्स, वार्ड आया, सफाई कर्मचारी उस मुताबिक नहीं हैं। पर सीमित संसाधनों में बेहतर काम के प्रयास जारी हैं। यदि आवश्यकता पड़ी तो दून महिला अस्पताल से भी स्टाफ लिया जाएगा।

सोशल डिस्टेंसिंग को बनाए घेरे पर नहीं माने लोग

ये हाल केवल वॉर्डों का नहीं है। बल्कि कोरोनेशन और गांधी अस्पताल में की ओपीडी में भी मरीज और तीमारदार एक दूसरे से सट सटकर खड़े हैं। डॉ. रमोला का कहना है कि रजिस्ट्रेशन, बिलिंग काउंटर और ओपीडी कक्ष के बाहर चूने से घेरे बनाए गए थे।

ताकि लोग सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें। पर किसी ने भी इसका पालन नहीं किया। अब यहां स्थाई मार्क बनाए जा रहे हैं। इसके अलावा सुरक्षाकर्मियों को भी निर्देशित किया है कि सख्ती से इसका पालन कराएं।

न्यूज डायरी

घर लौटने के लिए 280 किलोमीटर की दूरी नापेंगे

संवाददाता नैनीताल। कोरोना वायरस के कारण एक तरफ देश लॉकडाउन पर है तो दूसरी तरफ घरों से बाहर रहने वाले लोग महानगरों में फंसे हैं। कुमाऊं में हजारों की संख्या में उत्तर प्रदेश, बिहार समेत अन्य राज्यों के लोग फंसे हुए हैं। इनमें गौला में खनन करने वाले श्रमिक भी हैं तो रोड कंस्ट्रक्शन करने वाले वर्कर भी। काम धंधा सबकुछ ठप होने के कारण इनके सामने रोजी रोटी का संकट खडा हो गया है। बेबश–मजबूर लोग बडी तादाद में पैदल ही घर का रुख कर दिए हैं। घर से जहां उनका कुशल क्षेम जानने के लिए लगातार फोन आ रहा है, वहीं जैसे भी हो सके घर लौट आने की बात कही जा रही है। लोकिन लॉकडाउन के कारण बरती जा रही सख्ती से लोगों को पैदल भी निकलने में डर लग रहा है।

मजदूरों ने कहा, जैसे भी हो साहब घर पहुंचा दीजिए

संवाददाता हल्द्वानी में शुक्रवार सुबह 200 मजदूर एसडीएम कोर्ट पहुँचे। इनका कहना था कि लॉकडाउन की वजह काम बंद हो चुका है। ऐसे में खाने तक के लाले पड गए हैं। फिलहाल सरकार की तरफ से भी कोई मदद नहीं मिल पा रही है। कब तक मदद मिल सकेगी कहा भी नहीं जा सकता। लिहाजा, सभी को घर पहुँचवाने की व्यवस्था की जाए। मजदूर यूपी, बिहार आदि राज्य के हैं। ये बस किसी तरह से अपने घर पहुंचना चाहते हैं। कहते हैं कि घर पहुंच जाएंगे तो किसी भी तरह से खा पी लेंगे। अपने परिवार के साथ रहने का संबल ही बहुत होता है। वहीं प्रशासनिक अधिकारियों का कहना है कि सरकार की ओर से लोगों को जल्द से जल्द मदद पहुंचाने की कोशिश हो रही है।

गरीबों के घर में न आटा है, न दाल, सरकार तत्काल करे मददः नारसन

संवाददाता रूड़की। प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता गोपाल नारसन ने कहा कि इक्कीस दिन के लॉकडाउन के चलते दैनिक मजदूरों के घर आर्थिक तंगी के चलते चूल्हे नहीं जल रहे हैं। उनके घरों में न आटा है और न दाल, ऐसे में यदि सरकार द्वारा उन्हें तत्काल राशन उपलब्ध नहीं कराया गया तो वे कोरोना प्रकोप से पहले भूख से ही मर जायेंगे। कांग्रेस प्रवक्ता गोपाल नारसन ने केंद्र सरकार द्वारा गरीबों को तीन माह तक प्रतिमाह पांच सौ रूपये की आर्थिक मदद की घोषणा को गरीबों के साथ मजाक बताया। वहीं उन्होंने किसानों को भी दो हजार रूपये माहवार दिए जाने को नाकाफी बताया और मजदूरों को कम से कम पांच हजार रुपये व किसानों को दस हजार रुपये की आर्थिक सहायता तीन माह तक देने की मांग की।

लॉकडाउन के चलते मस्जिदों में लगे ताले, घरों में हो रही नमाज

संवाददाता हरिद्वार। लॉक डाउन के चलते उलेमाओं की अपील पर जुमा की अजान होने से पहले मस्जिदों को नमाजियों के लिए बंद कर दिया गया है। हमेशा की तरह दोपहर 12रू30 बजे से अलग–अलग मस्जिदों में अजान का सिलसिला शुरू हो गया है, लेकिन मस्जिदों के दरवाजों पर ताले लटके हुए हैं। साथ ही गेट पर नोटिस लिखकर यह बताया गया है कि लॉक डाउन के चलते सरकार की गाइडलाइन का पालन करते हुए अपने घरों पर ही नमाज अदा करें।

चूंकि जुमा की नमाज के लिए इमाम का खुतबा (नमाजियों के समूह को अरबी भाषा में दिया जाने वाला विशेष सम्बोधन) जरूरी होता है। इसलिए घरों में जुमा की नमाज अदा नहीं की जाएगी। अलबत्ता पांच फर्ज नमाजों में से एक जोहर की नमाज लोग अपने घरों में अदा कर रहे हैं। जमीअत उलेमा ए हिंद के सूबाई सदर मौलाना आरिफ कासमी का कहना है कि सभी मस्जिदों से यह ऐलान किया गया है कि लोग जोहर की नमाज अपने घरों में अदा करें। मस्जिदों में आम नमाजियों के लिए जुमा की नमाज अदा नहीं की जाएगी।

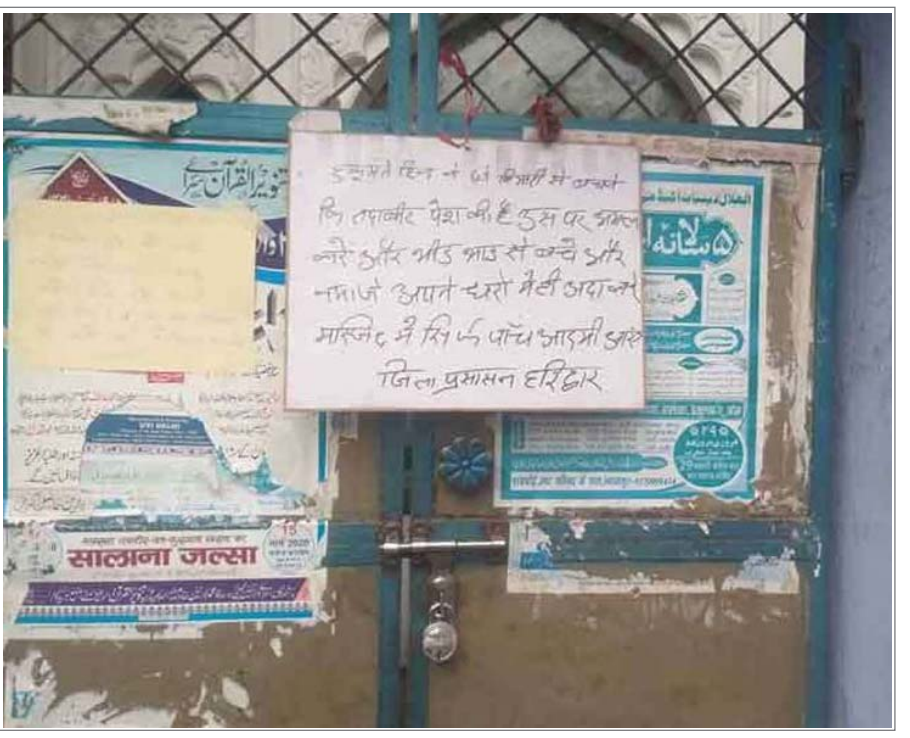

सुचारु रहेगी दवा की सप्लाई दिनभर खुलेंगे बड़े मेडिकल स्टोर

संवाददाता

देहरादून। दवा संकट के मद्देनजर सिस्टम सक्रिय हो गया है। औषधि अनुज्ञापन अधिकारी गढ़वाल एसएस भंडारी ने इस सिलसिले में होलसेल एवं सीएंडएफ एसोसिएशनों के साथ वार्ता की और उनकी समस्याओं को सुना। उन्होंने आश्वस्त किया कि समय के हिसाब से शासन आने वाले दिनों में दवा कारोबारियों को गाजियाबाद एवं मेरठ तक के लिए पास उपलब्ध कराएगा। ताकि दवा का संकट खड़ा न हो। स्थानीय स्तर पर दवा सप्लाई के लिए जिलाधिकारी कार्यालय से पास जारी किए जाएंगे।

औषधि अनुज्ञापन अधिकारी एसएस भंडारी ने बताया कि पहले हरिद्वार और फिर

■जिला स्तर पर जिलाधिकारी कार्यालय से सप्लाई के लिए पास बनवाया जा सकता है

देहरादून में एसोसिएशन पदाधिकारियों के साथ बैठक की गई। पदाधिकारियों का कहना था कि उन्हें आगे सप्लाई करने में कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन इसके लिए पहले कर्मचारियों के लिए पास उपलब्ध कराए जाएं। जिस पर भंडारी ने कहा कि जिला स्तर पर जिलाधिकारी कार्यालय से सप्लाई के लिए पास बनवाया जा सकता है।

सीएंडएफ के पदाधिकारियों का कहना था कि अभी तो दवा का संकट पैदा नहीं हुआ है, लेकिन आने वाले दिनों में ये

दिनभर खुलवाए जाएंगे बड़े मेडिकल स्टोर

एसएस भंडारी ने बताया कि बड़े मेडिकल स्टोर संचालकों से अपील की गई है कि वह अपनी दुकानें दिनभर खोलें और दुकान पर दो से तीन कर्मचारियों को ही बुलाएं। ताकि लोगों को किसी तरह की दिक्कत न उठानी पड़े।

स्थिति बनने जा रही है। ऐसे में उन्हें दूसरे राज्यों मसलन, गाजियाबाद, मेरठ आदि से दवा लाने की अनुमति दी जाए। इस पर बताया गया कि शासन इसे गंभीरता से ले रहा है और आने वाले दिनों में इसे लेकर भी पास व्यवस्था शुरू की जाएगी।

सड़कें खाली तो मंडियों का विस्तार क्यों नहीं

संवाददाता देहरादून। मिली छूट के दौरान किसी भी फल–सब्जी मंडी में भीड़ इसलिए भी अधिक हो रही है, क्योंकि मंडी या संबंधित दुकान पहले की तरह उसी जगह पर लग रही है। दूसरी तरफ कम समय मिलने के कारण अधिक लोग पहुंच रहे हैं। ऐसे में लोगों को कम से कम एक मीटर की दूरी बनाना संभव नहीं। इसके लिए यह जरूरी है कि लॉकडाउन की छूट के दौरान संबंधित दुकानों व मंडी क्षेत्रों का विस्तार किया जाए।

फल–सब्जी वितरण के स्थल का विस्तार किया जाना इसलिए भी इस समय मुश्किल नहीं है, क्योंकि सड़कें खाली हैं। इस समय दुकानों को सड़क किनारे अधिक दूरी तक स्थापित किया जा सकता है।

जब दुकानें ही दूर–दूर या विस्तृत रूप में होंगी तो लोगों की भीड़ भी उसी अनुपात में एक दूसरे से दूर होती जाएगी। शहर के तमाम बुद्धिजीवी वर्ग के लोग भी यही राय दे रहे हैं। इसके बाद भी प्रशासन इस तरह की व्यवस्था नहीं कर पा रहा, जो समझ से परे की बात है।